Cambridge International A Level

Cambridge International Examinations
Cambridge International Advanced Level

HINDI **9687/02**

Paper 2 Reading and Writing **October/November 2016**

INSERT

1 hour 45 minutes

8672841569-I

READ THESE INSTRUCTIONS FIRST

This Insert contains the reading passages for use with the Question Paper.

You may annotate this Insert and use the blank spaces for planning.

The Insert is **not** assessed by the Examiner.

पहले नीचे दिये निर्देशों को पढ़िए

संलग्न पत्र में दिये गये दो आलेखों का प्रश्न-पत्र के साथ प्रयोग करें।

इस संलग्न पत्र पर आप अपने काम की कच्ची रूपरेखा बना सकते हैं। परन्तु इस काम की कच्ची रूपरेखा का मूल्यांकन परीक्षक नहीं करेंगे।

This document consists of **3** printed pages and **1** blank page.

© UCLES 2016

CAMBRIDGE International Examinations

भाग 1

प्रथम आलेख 'कैशोर्य-उत्सुकता' को पढ़कर इस प्रश्न-पत्र में लिखे प्रश्न 1, 2 व 3 के उत्तर दीजिए।

कैशोर्य-उत्सुकता

किशोरावस्था के आकर्षण से कौन बचा है? यह ऐसी अवस्था है कि जिसमें व्यक्ति न तो बालक है और न ही वयस्क। अज़ीब सी है यह उम्र। एक किशोर अपने आपको बाल्यावस्था और युवावस्था के बीच में त्रिशंकु की भांति लटका हुआ पाता है। यही तो वह उम्र है जब वह अपने घर रूपी छोटे से संसार से बाहर आकर इस विशाल विश्व के विस्तृत रूप से परिचित होता है। इसी में ही उसके भावी जीवन की सफलता और असफलता निहित है। इसमें कुछ सत्य है तो कुछ भ्रम। जहाँ एक ओर इन किशोरों के सामने हज़ारों खुले मार्ग हैं वहीं दूसरी ओर अनगिनत आकर्षक मृग-मरीचकाएँ भी उसे भटकाने के लिये तत्पर हैं।

अपने सहयोगियों के आचार-व्यवहार से प्रभावित किशोर इस नयी पीढ़ी की सोच को अपनाकर अपने परिवार की सोच-समझ में भी परिवर्तन लाना चाहता है। दुर्भाग्यवश अभिभावक इसे उसका बचपना समझ कर एक कान से सुनकर दूसरे कान से निकाल देते हैं। यह देख कर वह किशोर अपने आप को अकेला अनुभव करता है तथा घर-परिवार व अन्य वयस्कों के प्रति असंतोष का अनुभव करता है।

पारिवारिक नियमों व बाहरी आकर्षणों के मध्य क्या उचित है और क्या अनुचित यह निर्धारित करना इस मासूम तरुण के लिये अत्यंत कठिन हो जाता है। माता-पिता की आज्ञा का पालक यह बालक आज उन्हीं के नियंत्रण से मुक्त होने के लिये छटपटा रहा होता है। यह इसलिये है क्योंकि किशोरावस्था ने अब उसमें स्वाभाविक उत्सुकता, अपने व्यक्तित्व की पहचान, अपनी छाप लगाने की इच्छा तथा अपने पैरों पर स्वयं खड़ा होकर निर्णय लेने की प्रबल अभिलाषा उत्पन्न कर दी है। वस्तुतः इसे विद्रोह नहीं समझना चाहिए। वह तो केवल मात्र स्वयं को एक व्यक्ति के रूप में स्थापित करते हुए समाज का एक अभिन्न अंग बनना चाहता है।

शिक्षा के नाम पर अन्य लाखों लोगों की भांति उसके पास भी प्रमाणपत्र तो है परन्तु न तो सिफ़ारिश है और न ही रिश्वत देने के लिये धन तो भला काम कहाँ से मिले? ऐसे में यदि उसे आज तक का परिश्रम व उपदेश व्यर्थ और भविष्य अंधकारमय लगे तो उसमें उसका क्या दोष? इस अपरिपक्व अवस्था में वह अपने नये उफ़नते हुए उत्साहों, असमंजसों व विस्मयों में उलझ कर रह जाता है। ऐसे में उसे आवश्यकता है किसी की जो उसके विचारों को धैर्य से सुन सके। यह अवस्था न तो उपदेश देने की है और न ही एक दूसरे को दोषित ठहराने की। यहाँ आवश्यकता है एक निष्पक्ष मनुष्य की जिस से वह खुले रूप से परिचर्चा करते हुए अपना मार्ग स्वयं चुन सके।

© UCLES 2016

भाग 2

निम्नलिखित आलेख ‘पीढ़ियों का पुल’ को पढ़ कर प्रश्न 4 और 5 के उत्तर दीजिए।

पीढ़ियों का पुल

पुरानी पीढ़ी अपनी नयी पीढ़ी के द्वारा उठाये गये कदमों को नकार कर तनाव व कुंठा को अपने जीवन में सम्मिलित कर लेती है और नयी पीढ़ी अपनी पिछली पीढ़ी की जीवन-पद्धति के विरुद्ध कुछ न कुछ आपत्ति उठाये रहती है। पुरातन और नूतन विचारों के मध्य चलने वाला यह सतत् संघर्ष पीढ़ी-अंतराल को जन्म देता है। यह सत्य है कि हर नयी पीढ़ी को विरासत में कुछ जीवन-मूल्य और आदर्श मिलते हैं जिन्हें वह परखना चाहती है। इसके साथ-साथ यह नयी पीढ़ी अनुसरण की अवज्ञा व स्वयं के अनुभवों के महत्त्व की प्रक्रिया से गुज़र रही होती है।

धन कमाने की अंधी दौड़ में कुछ माता-पिता के पास समय का अभाव होता है। वे आराम से बैठ कर नयी पीढ़ी के विचारों को समझ नहीं पाते हैं और अनुशासन के नाम पर नौजवानों पर प्रतिबन्ध लगाने की चेष्टा करते हैं। परन्तु आवश्यकता से अधिक अप्रासंगिक बाधाएं और तर्कहीन अनुशासन, नयी पीढ़ी के हृदय में आक्रोश उत्पन्न करता है। जब युवा पीढ़ी अपने जीवन का निर्णय अपने हाथों में लेना चाहती है तो वही अभिभावक इसे अपना अपमान समझने लगते हैं। परिणामस्वरूप दो पीढ़ियों की दूरी और भी बढ़ती चली जाती है।

ऐसे अवसरों पर प्रायः देखा जाता है कि परिवार के संदर्भ में तीसरी पीढ़ी, चाहे वह ननिहाल हो या ददिहाल, का स्थान प्रमुख हो जाता है। क्योंकि नाना-नानी व दादा-दादी के पास समय भी है और अनुभव भी। वे अपने नाती-नातिन और पोता-पोती की भावनाओं, संघर्षों व समस्याओं को न केवल ध्यान से सुनते हैं अपितु उन्हें उनके माता-पिता की युवावस्था के रसीले वृतान्त भी सुनाते हैं। जिससे उन्हें ज्ञात होता है कि उनके माता-पिता की युवावस्था भी उन्हीं की तरह उलझनों से भरी थी। अब नयी पीढ़ी के नौजवानों की दृष्टि में उनके अभिभावक सभी गुणों से सम्पन्न होने की अपेक्षा उन्हीं की भाँति एक साधारण व्यक्ति बन जाते हैं।

नाना-नानी व दादा-दादी नयी पीढ़ी के साथ तादात्म्य बढ़ाने में भी अधिक रुचि लेते हैं। युवाजन भी उन्हें नवीनतम बोलचाल की शब्दावली से लेकर उन आधुनिक तकनीकी उपकरणों का उपयोग सिखाते हैं जिनका प्रयोग नाना-नानी व दादा-दादी की युवावस्था में नहीं था। यह सब कुछ परिवार में नयी सहनशीलता तथा आत्मीयता की भावना उत्पन्न करने में सहयोग देता है इस प्रकार नाना-नानी व दादा-दादी की भूमिका एक सेतु के समान बन जाती है।

BLANK PAGE

Permission to reproduce items where third-party owned material protected by copyright is included has been sought and cleared where possible. Every reasonable effort has been made by the publisher (UCLES) to trace copyright holders, but if any items requiring clearance have unwittingly been included, the publisher will be pleased to make amends at the earliest possible opportunity.

To avoid the issue of disclosure of answer-related information to candidates, all copyright acknowledgements are reproduced online in the Cambridge International Examinations Copyright Acknowledgements Booklet. This is produced for each series of examinations and is freely available to download at www.cie.org.uk after the live examination series.

Cambridge International Examinations is part of the Cambridge Assessment Group. Cambridge Assessment is the brand name of University of Cambridge Local Examinations Syndicate (UCLES), which is itself a department of the University of Cambridge.

© UCLES 2016